

मुख्यधारा की कक्षाओं में विशिष्ट अधिगम अशक्तता

नीना डेविड

कबीर के माता–पिता थके–थके से लग रहे थे। वे जानते थे कि सातवीं कक्षा के बच्चों की यह अभिभावक–शिक्षक मीटिंग वैसी ही होगी जैसी हमेशा से होती रही है। शिक्षक यही कहेंगे कि कबीर को ठीक से पढ़ना नहीं आता, उसकी लिखाई अच्छी नहीं है, कक्षा कार्य पूरा नहीं है, वर्तनी सम्बन्धी बहुत सारी अशुद्धियाँ हैं और वह अकादमिक कार्यों में रुचि नहीं लेता। कबीर के प्रगति पत्र पर शिक्षक हमेशा यही टिप्पणी लिखते थे कि उसे अपने कार्य में सुधार करना है, यदि वह मेहनत करे तो बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। उसके माता–पिता जानते हैं कि वह औसत रूप से एक अच्छा विद्यार्थी है, उसके स्कूल और ट्यूशन के शिक्षक भी यही बात कहते हैं, लेकिन उसके अकादमिक कौशल और कक्षा में उसका प्रदर्शन अलग ही कहानी कहते हैं। वे सोचा करते कि यह बच्चा इतना आलसी क्यों है? इतना बुझा–बुझा क्यों है? अपने कार्य में रुचि क्यों नहीं लेता और उसके साथ काम करना इतना कठिन क्यों है? स्कूल ने सुझाव दिया है कि कबीर को मनोवैज्ञानिक के पास ले जाया जाए ताकि उसके अधिगम का औपचारिक आकलन किया जा सके। पहले तो माता–पिता इस विचार का विरोध करते हैं और कहते हैं कि उनका बेटा 'पागल नहीं' है लेकिन बाद में सहमत हो जाते हैं।

जब भी हाईस्कूल का कोई किशोर मेरे पास अधिगम के औपचारिक आकलन के लिए भेजा जाता है तो पता चलता है कि अच्छे ग्रेड न पाना तो समस्या का छोटा–सा अंश है। आकलन सत्र के दौरान कई बातें सामने आती हैं जैसे किशोर का नकारात्मक माता–पिता के साथ जूझना, शिक्षक और साथियों की प्रवृत्ति, कक्षा में तकरीबन रोज विफलता का सामना करना, माता–पिता का असहाय महसूस करना और दबाव में आना तथा शिक्षकों द्वारा मुख्यधारा की कक्षा में अधिगम की कठिनाइयों से निपटने में अपनी सीमाओं को व्यक्त करना। जो बच्चे कक्षा में कठिनाई महसूस करते हैं, उन पर किए गए शोध से पता चलता है कि अगर अधिगम के शुरुआती अनुभव नकारात्मक हों तो उससे खतरा हो सकता है (Hamre and Pianta, 2001)। और सम्भव है कि इनसे भविष्य में अकादमिक विकल्पों, जीविका के विकल्पों और मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ रहने पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़े।

कबीर की यह कहानी नई नहीं है। दुर्भाग्य की बात है कि ऐसा भारत के लाखों परिवारों में देखने को मिलता है। महाराष्ट्र में किए गए एक शोध से पता चलता है कि ध्यान देने और अधिगम की कठिनाई के लक्षणों के पहली बार नजर आने तथा बच्चे की समस्या को पहचानने में औसतन छह साल लग जाते हैं (Karande et al., 2007)। इस देरी का यह परिणाम होता है कि भले ही प्रारम्भिक स्कूल में इस समस्या की चेतावनी के निश्चित और शुरुआती संकेत मिल जाते हैं, लेकिन इसके बारे में चर्चा तभी होती है जब बच्चा माध्यमिक या उच्च विद्यालय में आ जाता है। अधिगम की कठिनाइयों के निदान को अग्रलिखित बातें प्रभावित करती हैं: समस्या की जल्दी पहचान न होना और बच्चे को मिलने वाली प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता। इन कारणों से यह समस्या गम्भीर हो जाती है।

विशिष्ट अधिगम अशक्तताएँ क्या हैं?

जब बच्चा शैक्षिक क्षेत्र में लगातार अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता तो शिक्षक और अभिभावक उसका आकलन करवाते हैं। इससे यह संकेत तो मिलता है कि बच्चे में अधिगम की अशक्तता है लेकिन इसका कारण अन्य मनोवैज्ञानिक या सामाजिक स्थितियाँ भी हो सकती हैं। भारत में विशिष्ट अधिगम अशक्तता या Specific Learning Disability (SLD) शब्द का प्रयोग अधिगम की कठिनाइयों या उन विद्यार्थियों के बारे में बताने के लिए भी कर लिया जाता है जिन्हें 'धीमी गति से सीखने वाला' माना जाता है। लेकिन एस.एल.डी.के लिए विशिष्ट प्रकार के निदान की जरूरत होती है और यह एकाधिक बुनियादी मनोवैज्ञानिक

प्रक्रियाओं के विकारों के विषम समूह को सन्दर्भित करता है जिनमें मौखिक या लिखित भाषा को समझना या प्रयोग में लाना शामिल है। ये अनेक प्रकार से प्रकट हो सकती हैं जैसे सुनने, सोचने, बोलने, पढ़ने, लिखने, वर्तनी या गणितीय गणना करने में बच्चे को होने वाली कठिनाइयाँ। एस.एल.डी. में अधिगम की वे समस्याएँ शामिल नहीं हैं जो मुख्य रूप से दृश्य, श्रव्य या गति सम्बन्धी, मानसिक मन्दता, भावनात्मक अशान्ति, वातावरणीय, सांस्कृतिक या आर्थिक रूप से पिछड़ेपन के कारण पैदा होती हैं (IDEA, 2004)।

एस.एल.डी.को अकसर 'छुपी हुई अशक्तता' का नाम दिया जाता है क्योंकि इसका पता आसानी से नहीं लग पाता और इस वजह से अभिभावक और शिक्षक उलझन में पड़ जाते हैं। एस.एल.डी.वाले बच्चों की संज्ञानात्मक कार्य क्षमता का क्षेत्र औसत या औसत से अधिक होता है और इसीलिए वह कक्षा के अन्य बच्चों की तरह ही लगता है, पर हो सकता है कि उसे पढ़ने, समझने, वर्तनी, लिखने और/या गणित सम्बन्धी कार्य करने में कठिनाई होती हो। ये कठिनाइयाँ कम या अधिक हो सकती हैं लेकिन होती हैं।

वर्तमान समय में एस.एल.डी.को विशिष्ट संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में होने वाली तंत्रिका सम्बन्धी न्यूनता के रूप में देखा जाता है। एस.एल.डी. के कारणों पर किए गए शोध से पता चलता है कि आनुवंशिक कारणों तथा/अथवा जन्म पूर्व, जन्म और जन्म के बाद की अवधि में मस्तिष्क को क्षति पहुँचने से ऐसा हो सकता है। एस.एल.डी.का कोई इलाज नहीं है लेकिन अगर इसका उपचार जल्दी और सतत रूप से किया जाए तो इससे प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता है।

कक्षा में एस.एल.डी.

शोधकर्ता हमें चेतावनी देते हैं कि भारत में एस.एल.डी. के अध्ययन को एक जटिल सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक, भाषा और प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दों का सामना करना पड़ता है (कारन्त, 2002)। भारत में एस.एल. डी. की व्यापकता के लिए उपलब्ध आँकड़े स्कूल जाने वालों की संख्या का 6 से 14% के बीच हैं। जमीनी स्तर पर इन आँकड़ों की हकीकत यह संकेत देती है कि एस. एल.डी. वाले अधिकतर विद्यार्थियों को सहायता और अनुसमर्थन देने के लिए केवल मुख्यधारा की कक्षा और शिक्षक व्यवहार्य बिन्दु बने रहेंगे। जिन स्कूलों के अध्यापन और शिक्षण शास्त्र का दृष्टिकोण समावेशी है वे एस.एल. डी. वाले बच्चों के लिए विशेष रूप से फायदेमन्द होते हैं।

अकसर शिक्षक बड़ी कक्षाओं, प्रशिक्षण की कमी और एक कठोर परीक्षा–संचालित पाठ्यचर्या का हवाला देते हुए कहते हैं कि इन बाधाओं की वजह से वे एस.एल.डी. वाले बच्चों को अधिगम के सार्थक अवसर नहीं दे पाते। ऐसे शिक्षक भी हैं जो कक्षा में मौजूद इन अन्तरों को स्वीकार करते हैं और उनके लिए कार्य करने के लिए तैयार भी रहते हैं। समावेशन को बढ़ावा देने के इच्छुक नीति निर्माताओं और स्कूल प्रबन्धक वर्ग को यह बात पहचाननी होगी कि शिक्षक समावेशी कक्षाओं को किस स्तर तक स्वीकार करते हैं, यह बात उनके व्यक्तिगत विश्वासों, विभिन्न प्रकार के सन्दर्भों और कार्यक्रम विशिष्ट परिवर्तनीय कारकों से प्रभावित होती है।

एस.एल.डी. के सम्भावित संकेतक

निदान की प्रक्रिया में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए: जो कदम भी उठाए जाएँ उसके बारे में बच्चे की प्रतिक्रिया, शिक्षकों, अभिभावकों से प्राप्त जानकारी और मनोवैज्ञानिक द्वारा दिए गए पाठ्यक्रम पर आधारित तथा मानकीकृत परीक्षणों में प्राप्त अंक। शिक्षकों को नैदानिक निर्णय करने की आवश्यकता नहीं है पर वे एस.एल.डी. वाले बच्चे में सम्भावित अधिगम के संकेतकों पर ध्यान दे सकते हैं और समुचित कदम उठाने की शुरुआत कर सकते हैं। सर्व शिक्षा अभियान मैनुअल (SSA 2003) में एस.एल.डी. के लिए एक जाँच सूची है जिसका उपयोग शिक्षक नियमित स्कूलों में प्रारम्भिक जाँच के लिए कर सकते हैं। तालिका 1 में सूचीबद्ध सम्भावित संकेतक बहुत व्यापक तो नहीं हैं किन्तु कक्षा में आमतौर पर दिखाई देने वाली कठिनाइयों को दर्शाते हैं। बच्चे के गुणों और रचनात्मक/प्रदर्शन कलाओं, खेलकूद आदि के साथ में ये संकेतक भी नजर आते हैं जो बच्चों में गम्भीरता के भिन्न–भिन्न स्तरों में प्रकट हो सकते हैं।

तालिका 1 : एस.एल.डी. के सम्भावित संकेतक

लेखन कौशल

- डिसग्राफिया (Dysgraphia) : लिखने में कठिनाई
- मौखिक क्षमता की तुलना में लेखन कार्य का स्तर कम होना
- अक्षरों को लेकर भ्रमित होना, अक्षर या उल्टे शब्द की मौजूदगी
- घिचपिच लिखित कार्य : अक्षरों की खराब बनावट, असंगत आकार और अन्तराल, बार–बार मिटाना और शब्दों को काटना

- वर्तनी की अशुद्धियाँ : एक ही लेखन कार्य में कोई एक ही शब्द अलग–अलग तरह से लिखना, गलतियाँ ध्वन्यात्मक या विचित्र वर्तनी का संकेत हो सकती हैं
- पेंसिल को ठीक तरह से न पकड़ पाना

पढ़ने के कौशल

- डिस्लैक्सिया (Dyslexia) : पढ़ने और समझने की कठिनाई
- ध्वनि मिश्रण और शब्दांश के विभाजन में कठिनाई
- ध्वनियों में अन्तर कर पाने की कठिनाई
- तुकान्त शब्दों में कठिनाई
- पढ़ने का असंगत स्तर
- पढ़ने में प्रवाह की कमी और समझने में कठिनाई
- पढ़ते समय पढ़े जा रहे स्थान से चूक जाना, शब्दों को छोड़ देना या जोड़ देना या बदले में कोई दूसरा शब्द रख देना
- पढ़ने की गतिविधियों से आँखें चुराना जैसे जोर से पढ़ने की गतिविधि

संख्यात्मक गणना

- डिस्केलकुलिआ (Dycalculia) : संख्यात्मक अवधारणाओं की कठिनाई
- संख्या रेखा सम्बन्धी भ्रम
- संख्या अनुक्रमण और स्थानीय मान सम्बन्धी भ्रम
- उल्टी संख्या
- अभिकलनात्मक संकेतों सम्बन्धी भ्रम
- पहाड़े सीखने में कठिनाई

गति सम्बन्धी कौशल

- गति समन्वय कठिनाई (Easily distracted- lost): गति सम्बन्धी कौशल की कठिनाइयाँ
- स्थूल और सूक्ष्म गति सम्बन्धी सम्भावित कठिनाइयाँ
- रंगने, बटन लगाने और फीते बाँधने में कठिनाई
- दिशा सम्बन्धी कठिनाइयाँ–बायाँ और दायाँ, ऊपर और नीचे, मानचित्र पर चतुर्दिश
- गति के क्रम को शुरू करने और बनाए रखने की कठिनाई

सामान्य व्यवहार

- आसानी से ध्यान बँटना–खोया–खोया रहना, अपने ही विचारों में डूबे रहना
- निर्देशों का पालन न कर पाना या उन्हें न समझ पाना
- अधूरा कक्षा कार्य
- व्यवस्थापन कौशल की कठिनाई
- यदि सक्रिय रूप से निगरानी की जाए तो बेहतर प्रदर्शन करना

कक्षा में

मुख्यधारा की कक्षा में एस.एल.डी. वाले बच्चों के अधिगम की जरूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा करना एक चुनौतीपूर्ण काम है लेकिन शिक्षकों को यह चुनौती स्वीकार करनी होगी। नीचे कुछ व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं। जिन बच्चों की अधिगम सम्बन्धी कठिनाई है, उनके साथ काम करते समय शिक्षक इन सुझावों को ध्यान में रख सकते हैं–

1. जानकारी प्राप्त करना : विद्यार्थी जिन कठिनाइयों को दर्शाते हैं, उनके बारे में पढ़ें।
2. इस बात को स्वीकारें कि बच्चे को अधिगम सम्बन्धी कठिनाई है और आपका सक्रिय और सहायक रवैया बच्चे की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है।
3. माता–पिता के साथ बातचीत और सहयोग करें। उनके साथ सकारात्मक फीडबैक साझा करें और विद्यार्थी स्कूल में किस प्रकार से कार्य कर रहा है, इस बारे में सरोकारों को उनके साथ बाँटें।
4. शिक्षण, कक्षा की व्यवस्था और आकलन की प्रक्रियाओं में सामंजस्य करें। जैसे कार्यों को छोटे–छोटे चरणों में तोड़ना, एसाइनमेंट या टेस्ट को पूरा करने के लिए समय सीमा बढ़ाना, दूसरे विद्यार्थी से नोट्स माँगने देना, कक्षा में दोस्त नियुक्त करना, इच्छानुसार बैठने देना, टेस्ट में मौखिक उत्तर देने की अनुमति प्रदान करना आदि।
5. राज्य और राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.सी., आई.सी.एस.ई., एन.आई.ओ.एस.) उन बच्चों को कुछ रियायतें देते हैं जिन्हें औपचारिक रूप से एस.एल.डी. वाले बच्चों के रूप में चिह्नित किया जाता है। शिक्षक को इन प्रावधानों के बारे में पता होना चाहिए और उनका उपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इन्हें 'बैसाखियाँ' नहीं समझना चाहिए, ये तो खेल के मैदान को समतल करने के साधन हैं ताकि एस.एल.डी. वाले बच्चों को भी शैक्षिक सफलता का अनुभव करने का मौका मिल सके।
6. सक्रिय रूप से अध्ययन कौशल सिखाएँ जिनमें व्यवस्थापन कौशल, समस्या हल करना, समय प्रबन्धन, अधिगम की रणनीतियाँ, समीक्षा की प्रभावी योजनाएँ आदि शामिल हैं।

7. विशिष्ट और रचनात्मक फीडबैक दें। उदाहरण के लिए किसी असाइनमेंट पर टिप्पणी देते समय 'बेहतर कार्य कर सकता है' कहने की बजाय यह बताना चाहिए बच्चे को किस विशिष्ट क्षेत्र में सुधार करना है–जैसे शब्दावली, वाक्य संरचना, उच्चारण आदि।

8. बीच–बीच में बच्चे की समझ की जाँच करते रहें और कक्षा की चर्चाओं में भाग लेने के लिए उसे प्रोत्साहित करें।

9. कार्य की शुरुआत में ही पर्यवेक्षण प्रदान करें और बाद में प्रगति का अनुश्रवण करें।

10. बच्चे के साथ सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाएँ और उसे लगातार सकारात्मक सुदृढ़ीकरण प्रदान करें।

11. पाठ के मुख्य शिक्षण उद्देश्यों पर ध्यान देते हुए बच्चे के लिए पाठ्य सामग्री को आसान बनाएँ।

References:

- Hamre, K. & Pianta, C (2001) Early Teacher-Child Relationships and the Trajectory of Children's School Outcomes through Eighth Grade Child Development,72(2) , 625-638
- Karande,S., Satam,N., Kulkarni,M., Sholapurwala,R., Chitre,A., and Shah,N.(2007). Clinical and psychoeducational profile of children with specific learning disability and co-occurring hyperactivity disorder. Indian Journal of Medical Sciences, 61, 639-64
- Karanth Prathibha. Learning disabilities in the Indian context. 2002. Available from: URL: http://www.nalandainstitute.org/aspfiles/learning.asp
- Individuals With Disabilities Education Act. 2004. Available from: URL: http://f r w e b g a t e. access.gpo.g o v / c g i - b i n / getdoc.cgi?dbname=108_cong_public_laws&docid=f:publ446.108

नीना डेविड एक क्लिनिकल मनोवैज्ञानिक हैं। वे विविध स्थितियों में बच्चों, किशोरों, वयस्कों और परिवारों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित सरोकारों और मुद्दों को सुलझाने की विशेषज्ञ हैं। सम्प्रति वे स्वतंत्र रूप से प्रेक्टिस कर रही हैं और साथ ही माल्या अदिति इण्टरनेशनल स्कूल, बेंगलूरु में परामर्श सेवाएँ प्रदान करती हैं। उन्होंने स्कूल के मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसकी अधिगम समर्थन सेवा बहुत प्रशंसनीय रही है। नीना ने अधिगम अशक्तता की इण्डियन एसोसिएशन ऑफ क्लिनिकल साइकॉलॉजिस्ट्स नेशनल टास्क फोर्स में कार्य किया। नीना ने वुमन्स क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नई से एप्लाइड मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री, निम्हान्स से क्लिनिकल मनोविज्ञान में एम.फिल की डिग्री और सेण्टर फॉर ह्यूमन इकॉलजी, टी.आई.एस.एस., मुम्बई से पीएच.डी की डिग्री प्राप्त की। उनसे neenajd@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल